दिनांक : 24 अगस्त, 2005

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

साधारण से लेकिन शिक्षित कार्यकर्ताओं (युवक-युवतियों) ने स्थानीय ग्रामवासियों से स्वावलंबन के आधार पर सामूहिक प्रयासों द्वारा ग्रामों के चतुर्दिक विकास का कार्य कर दिखाया है। चित्रकूट क्षेत्र के अतिपिछड़े और उपेक्षित गांवों के निवासी खुशहाली के दिन देखने लगे हैं। इस अनुभव से स्पष्ट है कि अगर स्वतंत्रता पाते ही युवाओं को छह लाख गांवों के विकास के लिए प्रेरित किया जाता तो आज हमारे दुर्दशाग्रस्त गांव देश के भविष्य-निर्माण में आधार-स्तंभ के रूप में काम आते। इस मूलभूत कार्य की सर्वथा उपेक्षा की गई है।

परिणामस्वरूप -

(1) देश के करोड़ों नागरिकों को दरिद्रता की असह्य यातनाएं सहनी पड़ रही हैं। असंख्य युवजन बेकारी के कारण दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। उनमें से अनेक अपराध जगत में शामिल होने के लिए मजबूर हैं। देश की यह मूलतः सकारात्मक युवा-शक्ति दिशाहीन बनी है।

(2) राजनेताओं का ग्रामों से संबंध टूट गया है। कांग्रेस जैसा ऐतिहासिक और देशव्यापी दल भी अपना अखिल भारतीय अस्तित्व खो बैठा है।

(3) जातीय, मजहबी एवं क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काकर राजनीतिक दल अधिक बलशाली बन रहे हैं। ऐसे संकुचित मानसिकता वाले दलों के सहयोग के बिना राष्ट्रीय सरकार का गठन असंभव हुआ है। इस कारण, मिली-जुली केन्द्रीय सरकारें राष्ट्रीय हित में काम करने में असमर्थ हुई हैं। यह अवस्था देश को टुकड़ों-टुकड़ों में बांटने की संभावना बढ़ा रही है। इस खतरनाक अवस्था से देश को बचाने का प्रयास करने के बजाए चोटी के नेता अपना व्यक्तिगत वर्चस्व प्रस्थापित करने के लिए आपस में ही लड़ रहे हैं। यह देखकर केवल आम लोग ही नहीं इन नेताओं के अनुयायी भी निराश हो रहे हैं।

अपना देश और समाज बहुत पुराना है। अनेक बार वह अधोगति का शिकार बना था। ऐसी अवस्था में नई पीढ़ी ने ही उसे उन्नति की राह पर ला खड़ा किया था। आज फिर से नई-पीढ़ी को ही वह दायित्व निभाना होगा।

स्वतंत्र भारत में अपनाई गई शिक्षा-पद्धति नई-पीढ़ी को देशभक्ति और समाज-निष्ठा से पूर्णतः वंचित कर रही है। सुशिक्षित कहलाने वाले परिवारों में भी जन्म पाने वाली

संतान सामाजिक दायित्व की प्रेरणा नहीं पाती। सभी प्रकार के उच्चस्तरीय लोगों की जीवन-शैली से स्वार्थसिद्धि के ही पाठ पढ़ने को मिल रहे हैं। अतः नवशिक्षित वर्ग देश और समाज की उन्नति का विचार तक नहीं करता।

वर्तमान नेतृत्व नहीं, बढ़ रही दुर्दशा ही नई पीढ़ी को अपना दायित्व समझाने का काम कर रही है। जनजीवन की विपदा देखकर और बेकारी की निरंतर बढ़ रही विभीषिका से त्रस्त होकर युवा-वर्ग बहुत बेचैन है। वह नई राह की खोज में हैं। संपर्क करने पर उसे दीनदयाल शोध संस्थान के कार्य की दिशा पसंद आ रही है। वह समझने लगा है कि ग्रामीण विकास के बिना आम लोगों का जीवन सुधर नहीं सकता। फलस्वरूप, नवविवाहित होकर भी पति-पत्नी के उच्च शिक्षा प्राप्त जोड़े ग्रामीण अंचल में काम करने के लिए राजी हो रहे हैं।

भारत की चिरजीवी एवं गतिशील सभ्यता तथा संस्कृति ग्रामीण अंचल में ही विकसित हुई है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" (Globalization) की अवधारणा वहीं प्रस्फुटित हुई थी।

अनंत काल से चली आ रही अपनी अखण्ड परंपरा बहुत समृद्धिशाली है। उसमें से अनेक बातें आज भी राष्ट्र-पुनर्रचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के अवसर पर हमें सोचना चाहिए था कि सदियों तक गुलामी में रहने के बावजूद अपना समाज टिका क्यों रहा? हमारी सभ्यता और संस्कृति नष्ट क्यों नहीं हुई? बुरे से बुरे दिनों में भी स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा बनी केसे रही? राजसत्ता से वंचित होकर भी हम फिर स्वतंत्र कैसे हुए? इन रहस्यों को जानने का प्रयास किया होता तो राष्ट्र-नवरचना का कार्य योग्य दिशा में गतिशील होता।

उसी समय सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक विचारकों की, राष्ट्र-नवनिर्माण की दिशा निर्धारित करने के लिए, सामूहिक विचारगोष्ठियाँ आयोजित की जाती तो देशोन्नति में सबका सहयोग संभव होता। इस अनिवार्य कार्य की पूर्णतः अवहेलना की गई और राजसत्ता को ही कल्पवृक्ष माना गया। राष्ट्र-जीवन के अन्य सभी महत्वपूर्ण पहलू भुला दिए गए।

अध्यात्मिक अधिष्ठान के बिना जनजीवन स्वास्थ्य लाभ नहीं कर सकता। प्रत्येक मानव में शरीर, मन और बुद्धि के साथ आत्मा अभिन्न रूप से जुड़ी रहती है। वह ही मानव में संवेदनशीलता, सहिष्णुता, नैतिकता, विवेकशीलता, प्रामाणिकता, कर्तव्य-परायणता, सदाशयता, स्नेहशीलता, परस्पर पूरकता एवं सहअस्तित्व के मानवीय गुणों की प्रेरणा प्रदान करती है। इस प्रक्रिया को ही अध्यात्मिकता कहते हैं। इस सर्वाधिक महत्व के कार्य को सभी ने नजरअंदाज किया है। पूजा-पाठ करना मात्र अध्यात्मिकता नहीं है। उपर्युक्त गुणों के बिना जनजीवन शांतिदायक, सुखमय और उन्नतशील बन नहीं सकता।

राजसत्ता में उपर्युक्त गुणों का सृजन करने की क्षमता ही नहीं है। केवल राजसत्ता कलह का कारण बनती है। वह नवस्वतंत्र देश का चतुर्दिक विकास कर ही नहीं सकती। वह अकेले विषमता का कारण बनती है। उसी को सर्वस्व मानने के कारण असंख्य बलिदान देकर प्राप्त स्वतंत्रता भ्रष्टाचार की वेदी पर बलि चढ़ गई है।